REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

साम्प्रदायिक सद्भाव के अग्रदूत : संत रैदास

प्रा.डॉ. वसंत पुंजाजी गाडे
अध्यक्ष हिंदी विभाग, नागनाथ महाविद्यालय,औंढा. ना.जिला हिंगोली.

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य के इतिहास में संत साहित्य का अपना एक विशिष्ट सीान है । संत शब्द मूलत 'सत' से बना है । संत शब्द को हम उस व्यक्ति विशेष का बोधक कहेंगें, जिसने सत रूपी परमतत्व का अनुभव कर लिया हो और जो इस प्रकार असने साधारण व्यक्तित्व उठकर उसके साथ तद्रुप हो गया हो अथवा उसकी उपलब्धि के फलस्वरूप अखंडता में पूर्णतः प्रतिष्ठित हो गया है । संत समाज के हर वर्ण के प्रति सरोकार करता है । उस समाज को सदाचारी तथा सतवृत्तिपूर्ण बनाने का प्रयास करता है । भक्तिकालीन समग्र संत कवि का काव्य मानवतावाद के बुनियाद पर लिखा गया दिखाई देता है जो मानव को आगे बढाने की प्रेरणा देता है इस अर्थ में भक्तिकालीन संत कवि प्रगतिशील कवि कहे जाते है ।

भारत में विभिन्न जाति, धर्म व संप्रदाय के लोग रहते है । समुचा मध्यकाल अंधविश्वास, रूढियॉ, पाखंड एवं बाहयाडंबरों में जकडा हंआ था । मुल्ला और प्रडित भोली–भाली जनता को बहकाकर धार्मिक उन्माद उत्पन्न कर रहे थे और उससे अपना स्वार्थ साधते रहे । जहॉ एक से अधिक संप्रदाय के लोग एक स्थान में रहते है। उनमें एकता का होना बहुत आवश्यक होता है । एकता याने सद्भाव, समन्वय जहॉ समन्वय खत्म हो जाता है वहॉ विभाजन होने में देर नही लगती । आज यही चिंता हमें सता रही है कि, क्या भारत की साम्प्रदायिक शक्तियॉ हमारी सदभावना पर हावी हो रही है ? अगर हो रही है तो फिर हमें सदभाव, एकता और अखंडता को बनाये रखने के लिए क्या करना पडेगा ? इन सब परिस्थितियों में हमें आज आवश्यकता है ऐसे चरित्र, विचार, संस्कार और साहित्य की जो देश की एकता और अखंडता के लिए सामाजिक व सांस्कृतिक सौहार्द, देश की जनता में आपसी भाइचारा, प्रेम व्यवहार और धार्मिक सद्भाव स्थापित कर सके । इसी प्रकार का साहित्य मध्यकाल के अंतर्गत बहुत अधिक संख्या में निर्माण हुआ था । क्योंकि उस समय भारत में मुस्लिम राजा राज्य विस्तार के साथ–साथ दीन के प्रसार के लिए भी युध्द और संघर्ष कर रहे थे । दानों समुदाय एक–दुसरे के दूश्मन बने हुए थे । हिन्दू बहुदेववादी तो मुसलमान अल्लाह को छोडकर किसी दूसरे को मानना कुफ्र की हत्या करना सम्माननीय माना जाने लगा । "अतएव कोई आश्चर्यजनक नहीं कि हिन्दुओं पर मुसनमानों का अत्याचार कम न था और नहीं मुसलमानों के प्रति हिन्दुओं की घृणा ।" परंतु इसी काल में कुछ ऐसे भी महामना, संत, कवि थे जिनको समाज की यह अवस्था सामाजिक स्वास्थ के लिए घातक लगी । एसीलिए उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से दोनों संप्रदायों में सद्भाव स्थापित कर सामाजिक एकता का संदेश दिया । 'दोनों जातियों के दूरदशी विरक्त महात्माओं को, जिन्हें जातीय पक्षपात छू नहीं गया था, जिनकी दृष्टि तत्काल हानि–लाभ, सुख–दुख और हर्ष–विषाद के परे जा सकती थी, इस अवाश्यकता का सबसे तीव्र अनुभव हुआ और वे हिन्दू–मुस्लिम सदभाव के लिए सक्रिय हो गये ।"

भारत में अनेक आंदोलन हुये। भक्ति आंदोलन उनमें एक है। हिन्दी साहित्य के मध्यकाल में अनेक संत हुए। हिन्दू–मुस्लिम सदभाव के लिए स्वामी रामानन्द के सभी जातियों के शिष्य अग्रणी थे । भवानन्द, सुखानन्द, आशानन्द, सुरसुरानन्द, परमानन्द, महानन्द, श्री आनन्द आदि ब्राम्हण तो रैदास चमार, कबीर जुलाहा, धन्ना, जाट, सेना नाई, सदना कसाई, पीपा राजपूत जाति के थे जिन्होने मध्यकालीन सास्कृतिक, साम्प्रदायिक सदभाव की उच्चतम अभिव्यक्ति की । जिसमें सवर्ण–असवर्ण, हिन्दू–मुसलमान और स्त्रियों को समाज में समानता का स्थान देकर एक प्रकार की साामाजिक एकता स्थापना की ।

संत रैदास मध्ययुग के प्रतिभा संपन्न कवि है। संत रैदास ने तत्कालीन रूढीयों विषमताओं के प्रति बडी सहजता से अपनी प्रतिक्रीया को व्यक्त किया है । खंडन में उन्होने कबीर की तरह तीव्र आक्रोश नहीं अपनाया बल्कि शांत वाणी को अपनाया । हिंदू–मुसलमानों के सांप्रदायिक विव्देष , सामाजिक रूढीयों, वर्णव्यवस्था, जातिप्रथा, धार्मिक अंधविश्वासों, मिथ्याचारों तथा बाहयाडंबरो को रैदास जी ने बडे संतुलित शब्दों में विरोध कर समाज में परिवर्तन हेतु सदाचार मन की शुध्दता पर विशेष बल दिया यह उनकी प्रगतिशील चेतना का प्रमाण है ।

उस समय संपुर्ण भारत छोटी–छोटी रियातयों में बटकर राजनीतिक दृष्टि से महत्वहीन हो गया था वही धार्मीक और सामाजिक दृष्टि से भी पतन के शिखर पर था । शासकों का अन्याय, धार्मिक अंधविश्वास और सामाजिक विकृतियों का काल था । ऐसे दीन–हीन भारत की शोषित जनता को सामाजिक एकात्मक स्वास्थ का संदेश देने के लिए संत रैदास का अविर्भाव हुआ । उनका जन्म 'मांडूर (अब मुडवाडीह) वाराणसी के पास 'चमार' जाति में हुआ । मॉ का नाम करमाबाई और पिता का नाम राघवदास था जो चमडे के जूते बनाने का काम करते थे । पत्नी लीना और पुत्र का नाम विजयदास था । इन्होंने देश भर भ्रमन कर निर्गुण ईश्वर का उपदेश अपने साहित्य के माध्यम से दिया । उन्हे हिन्दी साहित्यकाश में चमकता हुआ ध्रुव तारा माना जाता है । रैदास वाणी का प्रभाव देश के कोने–कोने पर पडा । इसिलिए केवल निम्न वर्ग ही नही तो उच्च वर्ग की मिराबाई और चित्तोड की झाली रानी भी इनकी शिष्या हो गई । परिणामतः लोग अपने को रैदास, रोहिदास, रोहित, रमदासी, रमदासिया, रैगर, रेहगर, रायदास, रूर्ददास आदि नामों से गौरवान्वित करने लगे ।

संत रैदास समाज के उस हिस्से से संबंध रखते थे जो शताब्दियों से भारतीय समाज के शोषण का शिकार होकर छाटपटा रहा था । वर्णव्यवस्था और जाति व्यवस्था के नाम पर इस को शूद्र और अछुत कहकर तीरस्कार किया गया था । इस सामूहिक यातना को सहन करते हुए संत कवि रैदासकी मानसीकता विद्रोह हो उठती ऐसे जब अछूत को पठन–पाठन, पूजा–अर्चा का कोई अधिकार नहीं था तब रैदास कहते है कि ––

"हरि सा हीरा छांडि करि, करै आन की औस ।
ते नर जमपुर जाहिंगे, सति भाखै रेदास ।"

संत रैदास ने अनिष्ठ प्रथा–परंपरा और रूढियों का विरोध किया । एक सजग साहित्यकार के दायित्व के रूप में उन्होनें हिन्दू और मुसलमानों में एकता स्थापित करने का प्रयत्न किया । क्योंकि वे जानते थे कि, धार्मिक दरार मिटने से ही भावात्मक एकता स्थापित हो सकती है । इसलिए उन्हें साम्प्रदायिक पदभाव का अग्रदूत कहने में कोई अत्युक्ति नहीं है । इस शोध आलेख में संत रैदास जी के साहित्य या काव्य के उन्ही बिंदुओं का संशोधनात्मक विश्लेषण किया है ।

समाज में बहिष्कृत या निम्न स्तर का वर्ग कहकर चामार जाति की लगातार अवहेलना की। चामार जाति के लोग भी समाज की इस उपेक्षा को सहनकरते और वही समाज स्वयं भी हीनता का शिकार हो गया था। संत रैदास ने चामार जाति के काम को ईश्वरीय व्यवस्था समझकर स्वीकार किया । ऐसे समय में संत रैदास ने इस वर्ग को स्वाभिमान से परिपुर्ण करने का प्रयास किया । इतनाही नहीं आपनी चमार जाति कही पर भी छिपाने का प्रयास न करने को कहा। पुर्नजन्म मिला तो फिर से चमार जाति में होने की कामना व्यक्त करते है ।

"कह रैदाससुनि के सबै अन्तह करन विचार ।
तुम्हारी भगति के कारने फिरी है हो चमार ।।"

कर्म पर आधारित वर्णव्यवस्था में विकृति उस जन्म पर आधारित वर्णव्यवस्था हो गई । इस जातिव्यवस्था का जन्म हो गया । रैदास ने जातियत मानवता पर कलंक घोषित किया क्योंकि यह मानवत खाये जा रही है –

"जात–पात के फेर नाहि उरसि रहि सब लोग ।
मानुसता को खात है, रैदास जात का रोग ।।"

संत रैदास की वाणी में सांप्रदायिक सदभाव स्वर है । सांप्रदायिक दंगो तथा हिंसा को त्यागकर प्रेम और सौहार्द को अपराने को कहते है। सभी का भगवान एक है मनुष्य ने केवल नाम अलग रखे है। संत रैदास दोनोंके परमात्मा और पार्थनास्थल को एक ही मानते है । दोनों को आपस में ना लडने की सलाह देते है । राम–रहीम , वेद–कुरान और मंदिर–मस्जिद एक ही । हमें दोनों का बराबर सम्मान करना चाहिए । उनके अनुसार काबा–काशी में कोई भेद नही है । हमारा अराध्य एक है फिर क्यों हम एक–दूसरे के दुश्मन बनते है । उनका यह संदेश आज भी भारत की साम्प्रदायिकता एकता की चौखट को मजबुत बनाने में सहायक है । यहॉ इन्सान एक है –

"कृष्ण–करीम, राम–हरि–राघव, जब लग एक न पेशा ।
वेद–कतेब–कुरान–पुरानन सहज एक नहीं वेशा ।
मंदिर–मस्जिद एक है, इस मंह अन्तर नाहि ।
रैदास राम रहमन का , झागडऊ कोऊ नाहिं ।।"

भारतीय समाज में साम्प्रदायिक सदभाव के लिए संत रैदास जी के यह विचार संजीवनी की तरह है । क्योंकि आज देश में साम्प्रदायिक ताकतों के प्रभावी होने से देश की धर्म निरपेक्ष समाज व्यवस्था चरमरा रही है । अगर उसे सही सलामत रखना है तो रैदास जी के इन विचारों को फिर से समाज में स्थापित करना पडेगा । व्यक्ति को जाति, धर्म, पंथ और वर्ण के नाम पर बॉटने की प्रक्रिया का रैदास जी ने विरोध कर मनुष्य जाति की एकता को अभिव्यक्ति दी है ।

संत रैदास की वाणी में मानवतावादी स्वर है । रैदास जी कहते है कि इस संसार का प्रत्येक मनुष्य समान है । वे इसे कंगन और कनक के रूप के व्दारा समझाते है कि कंगन और कनक (सोना) एकरूप होते है । जिस प्रकार सोना और कंगन एक ही है उसी प्रकार संसार के सभी मनुष्य हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन और बौध्द सब एक ही है । प्रत्येक व्यक्ति जन्म से समान है । जन्म की प्रक्रिया से समान है । सबकी शारीरिक रचना जैसे रक्त, मांस और अस्थियॉ आदि एक जैसी है । सब के खून का रंग लाल ही है । लेकिन हम मनुष्य को फिर इस दुनिया में जाति, धर्म, पंथ और वर्ण आदि के नाम पर क्यों बॉटते है । मानव प्रेम ही ईश्वर प्रेम है। मानवतावादी भावना से मनुष्य की उन्नति संभव है, यह जानकर संतो ने मानवतावादी संदेश दिया है। संत रैदास की वाणी में मनुष्य को सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा, करूणा, प्रेम, त्याग, सदाचार, सत्संग, पतिवृत्य, परोपकार आदि जीवन मूल्यों को स्विकृत करने और काम, क्रोध, लोभ, मत्सर, अहंकार आदि दुर्गुणों के त्याग का उपदेश है। आज भी समाज के उन्नति में यह जीवन मूल्य अत्यंत उपयोगी है। संत रैदास कहते है–

"रैदास कंगन और कनक मंहि, जिंगि अंतर कछु नाहिं ।
तैसऊ ही अंतर हिन्दुअन तुरकन मांहिं ।।
हिन्दू तुरक नहीं कछु भेदा, सभ मंह एक रक्त और मांसा ।
दोऊ एकह दूजा कोऊ नांहि, पेख्यो सोध रेदास ।।"

संत रैदास समाज का मानवीय निरूपण करते है । वे वर्गभेद, जातिभेद और धर्मभेद को अस्वीकार करते है । स्वाधीनता के पक्षधर पराधीनता के प्रखर विरोधी शायद ही तत्कालीन अन्य किसी संत ने इनते प्रखर शब्दों में पराधीनता का विरोध किया है । उनकी स्वराज्य की कल्पना भी समतामूलक मानवतावादी लोकतंत्र को प्रतिबिंबित करती है । वे अपने ईश्वर को अनाम, अनीश्वर की उपमा देते है । उनके अनुसार जहॉ सेवा का

भाव है वहॉ स्थान और नाम का कोई महत्व नहीं है । इसलिए वे हिन्दू और मुसलमान की स्थान और नाम की भेद नीति का विरोध कर ऐक्यभाव का संदेश देते है –

"जो खुदा पच्छिम बसै तो पूरब बसत है राम ।
'रैदास सेवौ जिह ठाकुर कुं, तिह ठांव न नाम ।"

संत रैदास ने देखा की समाज में धार्मिक अंधश्रध्दा है। समाज में सामाजिक विषमता है। पाखंडी लोग,पाखंडी साधु की समाज में कमी नहीं है। वे समाज में फैले अंधविश्वास को दुर करने के लिए कई उदाहरण देते है। वे कहते है हम सब एक है अंधविश्वास को नष्ट कर एक सत्य धर्म, ज्ञान धर्म और मानव धर्म की स्थापना करने का उपदेश देते है। रैदास जी के अनुसार –

"जहां अंधविश्वास है सत परख तहं नाहिं ।
'रैदास सत साई जानि हौ जौ अनभउ होई मन मांहि ।"

मनुष्य–मनुष्य में किसी भी प्रकार का कोई भी भेद ना हो । रैदास जी धर्म के नाम पर मानव कल्याण के खिलाफ किसी भी प्रकार के विचार का विरोध करते है । समस्त मानव जाति को एक मानव धर्म में बॉधने के कार्य महत्व देते है। समतामूलक मानवतावाद की स्थापना करने का प्रयत्न करते है–

"ऐसा चाहों राज में, जहॉ मिलै सबन को अन्न ।
छोट बडो सभ सम बसै, रैदास रहें प्रसन्न ।।"

व्यक्ति धर्म के लिए नहीं : धर्म व्यक्ति के लिए है । धर्म की उत्पत्ति के पीछे भी मानव कल्याण या जगत–कल्याण ही महत्वपुर्ण बात थी । रैदास जी धर्म के नाम पर मानव कल्याण के खिलाफ किसी भी प्रकार के विचार का विरोध करते है । हिन्दू धर्म की जातिप्रथा का तीव्र विरोध कर उसे समाप्त करने की बात करते है । ईश्वर प्राप्ति के लिए प्राणी या जीव हत्या को वे दूषित मनोवृत्ति कहते है ! इस तरह वे अंधविश्वास को नष्ट कर एक सत्य धर्म, ज्ञान धर्म और मानव धर्म की स्थापना करते है । जिसमें मनुष्य–मनुष्य में किसी भी प्रकार कोई भी भेद ना हो ।

अंततः धर्म की उत्पत्ति के पीछे भी मानव कल्याण या जगत–कल्याण ही महत्वपुर्ण है। रैदास जी धर्म के नाम पर मानव कल्याण के खिलाफ किसी भी प्रकार के विचार का विरोध करते है । हिन्दू धर्म की जातिप्रथा का तीव्र विरोध कर उसे समाप्त करने की बात करते है । ईश्वर प्राप्ति के लिए प्राणी या जीव हत्या को वे दूषित मनोवृत्ति कहते है ! इस तरह वे अंधविश्वास को नष्ट कर एक सत्य धर्म, ज्ञान धर्म और मानव धर्म की स्थापना करते है । जिसमें मनुष्य–मनुष्य में किसी भी प्रकार कोई भी भेद ना हो । संत रैदास ने कुरितीयॉ, अंधविश्वास तथा जातिवाद के विरूध्द आवाज उठायी। जिससे निम्न जातियों में आत्मगौरव की भावना जागृत हुई।

संदर्भ :–

1. संत साहित्य की सामाजिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि – डॉ. सावित्री शुक्ल
2. संत काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता – डॉ. रवींद्रकुमार सिंह
3. सतगुरू रविदास वाणी – डॉ. वेणी प्रसाद शर्मा
4. संतकवि रैदास : मूल्यांकन और प्रदेय डॉ. एन. सिंह